विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 24 : अंक 14 : नई दिल्ली : 29 जून - 5 जुलाई 2018

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण अहिंसा यात्रा का कुशल नेतृत्व करते हुए सानंद सुखसातापूर्वक चेन्नई की ओर गतिमान हैं। वर्षा और गर्मी का मिला-जुला रूप इन दिनों देखने को मिल रहा है। अब तमिलनाडु और चेन्नई की सीमा बिल्कुल निकट है। १ जुलाई को तमिलनाडु की सीमा में मंगल प्रवेश के बाद ५ जुलाई को मिंजूर में पूज्यप्रवर का तमिलनाडु स्तरीय स्वागत समारोह आयोजित होगा। उसके बाद प्रारम्भ होगी पूज्यप्रवर की चेन्नई महानगर की उपनगरीय यात्रा। इस अतिव्यस्त और श्रमसाध्य यात्रा के दौरान १८ जुलाई को दीक्षा समारोह भी समायोजित होगा। पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार परमाराध्य आचार्यप्रवर २१ जुलाई को चेन्नई के 'माधावरम्' में ससंघ मंगल भव्य चातुर्मासिक प्रवेश करेंगे। करीब आधी सदी के बाद मिले इस दुर्लभ अवसर को लेकर चेन्नईवासियों में अतिशय उल्लास का वातावरण देखने को मिल रहा है। प्रायः प्रतिदिन सैंकड़ों चेन्नईवासी पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ और सेवार्थ पहुंच रहे हैं। दक्षिण भारत के विभिन्न क्षेत्रों के लोग भी इस सुअवसर से लाभान्वित होने पहुंच रहे हैं। चेन्नईवासी चतुर्मास प्रवास की तैयारियों को अंतिम रूप देने में निष्ठा के साथ जुटे हुए हैं। चतुर्विध धर्मसंघ की नजरें अब २७ जुलाई की रात्रि आठ से नौ बजे के बीच के समय पर टिकी हुई हैं, उस समय परम पावन आचार्यप्रवर सन् २०२१ के चतुर्मास की घोषणा करेंगे। इस संदर्भ में अब तक विभिन्न प्रार्थी क्षेत्रों के हजारों लोगों के पहुंचने की सूचना प्राप्त हो चुकी है।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण आन्ध्रप्रदेश में

जीवन में हो योग का प्रयोग

२१ जून। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः राजूपलेम से नेलूर के लिए प्रस्थान किया। मार्ग में राजूपलेम के एक ग्रामीण ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर निवेदन किया--'मुझे आपके आशीर्वाद की बहुत आवश्यकता है, आप मुझे आशीर्वाद प्रदान कीजिए।' पूज्यप्रवर ने उसे मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। मार्गस्थ कई खेतों में चावल की खेती प्रारम्भिक अवस्था में थी, इसलिए कई खेत पानी से भरे थे।

सूर्य ज्यों-ज्यों आरोहण करता जा रहा था, त्यों-त्यों उसका आतप बढ़ता जा रहा था। सूर्योदय के करीब दो घंटे बाद तो अपनी तीखी धूप से वह शरीर को मानों बींधने लग गया। मौसम की इस प्रतिकूलता में भी महातपस्वी आचार्यप्रवर समत्वभाव से निरंतर गतिमान थे, किन्तु बादलों ने सूर्य की इस स्वच्छंदता को देखा तो उन्होंने अपने विभिन्न समूह बनाए और साहस करके सूर्य का सामना करने के लिए गतिमान हो गए। हवा की सहायता से बादलों की टुकड़ियां सूर्य के निकट पहुंची और एक टुकड़ी ने सूर्य को अदृश्य होने के लिए विवश कर ही दिया। कुछ ही समय में उसे छिन्न-भिन्न कर सूर्य पुनः आतप बरसाने लगा तो दूसरी टुकड़ी उसके बीच में आ गई। सूर्य किरणों ने उसे भी भेद दिया तो तीसरे मेघ समूह ने सूर्य को बाधित कर दिया। इस प्रकार सूर्य और बादलों का युद्ध प्रायः पूरे विहार के दौरान जारी रहा।

इस 'एक्सप्रेस वे' (सिक्सलेन हाइवे) पर स्थान-स्थान पर फ्लाईओवर और पुल बने हुए हैं। गांवों के आसपास बने फ्लाईओवर के कारण न तो राजमार्ग के राहगीरों को दिक्कत होती है और न ही ग्रामवासियों को। रेलमार्ग पर बने पुल 'रेलवे क्रासिंग' में लगने वाले समय की भी बचत कर देते हैं। एक फ्लाईओवर के

ऊपर से दृश्यमान हो रहे खेतों में चावलों की फसल ऐसे लग रही थी, मानों हरे रंग का कालीन बिछा हुआ हो। कुछ चमकदार वह हरितिमा राहगीरों का ध्यान अपनी ओर अनायास आकृष्ट कर रही थी। मार्ग के आसपास नारियल, नीलगिरि और पाइन के भी हजारों वृक्ष दृष्टिगोचर हो रहे थे। 'पेन्ना' नदी पर बना पुल पूज्यचरणों के स्पर्श से पावनता को प्राप्त हुआ।

अपने आराध्य का प्रथम आगमन नेलूर के चार तेरापंथी परिवारों को हर्षाभिभूत बनाए हुए था। उनकी प्रसन्न मुखाकृति पर उनका आंतरिक उल्लास मुखरित हो रहा था। स्थानीय अन्य जैन समाज में भी पूज्यप्रवर के पदार्पण से उत्साह का वातावरण था। लोग दूर-दूर तक पूज्यप्रवर की अगवानी में पहुंच रहे थे। स्वागत जुलूस में भी अन्य जैन समाज के लोग बड़ी संख्या में संभागी बने हुए थे। परम पूज्य आचार्यप्रवर लगभग १४.० कि.मी. का प्रलम्ब विहार कर नेलूर के वी.आर. लॉ कॉलेज में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन के दौरान कहा--'शब्द अपने आप में जड़ होता है, अजीव होता है, पुद्गल होता है, किन्तु उसका प्रभाव आदमी पर हो सकता है। भावात्मक चेतना जप के साथ जुड़ जाती है तो चेतना का निर्मलीकरण हो सकता है। योग एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। आसन-प्राणयाम भी योग का एक अंग है। अष्टांग योग की भी बात आती है। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि--यह अष्टांग योग है।

आचार्य हेमचन्द्र जैन शासन के एक महान विद्वान आचार्य थे। उन्होंने 'अभिधानचिन्तामणि' ग्रंथ में अष्टांग योग की संक्षिप्त चर्चा की है। उन्होंने बताया--'मोक्षोपायो योगो ज्ञानश्रद्धानचरणात्मकः'--जो मोक्ष का उपाय है, वह योग होता है, वह ज्ञान, दर्शन और चारित्र के रूप में है। ज्ञान, दर्शन और चारित्र की साधना अपने आप में योग है। मोक्ष से जोड़ने वाली सारी प्रवृत्ति योग होती है। आसन, प्राणायाम भी योग-साधना के अंग हो सकते हैं, इनका अपना महत्त्व भी हो सकता है। प्रत्याहार का भी अपना महत्त्व है। आसन, प्राणयाम के साथ यदि यम-नियम नहीं है तो बहुत बड़ी कमी है। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह हैं। ये पांच यम (व्रत) जीवन में आ जाएं तो मूल तत्त्व जीवन में आ जाता है। उसके साथ स्वाध्याय, ध्यान, समाधि भी उपयोगी हो सकते हैं। केवल आसन, प्राणायाम तो योग का थोड़ा हिस्सा है। यम-नियम के रूप में व्रत की चेतना जीवन में आ जाती है, साथ में स्वाध्याय, ध्यान भी जुड़ जाते हैं तो योग-साधना बहुलांश रूप में हो जाती है।

परम पूज्य गुरुदेव तुलसी और परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी ने प्रेक्षाध्यान की बात बताई थी। ध्यान भी योग-साधना है। आदमी शरीर को स्थिर करने, वाणी को संयमित और मन को एकाग्र बनाने का अभ्यास करे, यह काम्य है।

जप के प्रयोग के द्वारा भी योग-साधना की जा सकती है। शरीर को स्थिर कर श्वास के साथ जोड़ दिया जाए तो एक अच्छी योग-साधना हो सकती है। अध्यात्म की साधना में जप बहुत सरल और अच्छा प्रयोग है। जप की तरह आराध्य की स्तुति में लीनता आ जाए तो वह भी योग-साधना है। उससे चेतना की निर्मलता का विकास हो सकता है।

जैन शासन में नमस्कार महामंत्र एक लब्धप्रतिष्ठ महामंत्र है। यह कितना पवित्र मंत्र है। जिसमें वीतरागता मानों कूट-कूटकर भरी हुई है। अर्हत् भगवान वीतराग होते हैं, राग-द्वेष से मुक्त होते हैं। सिद्ध भगवान भी वीतराग होते हैं, राग-द्वेष से मुक्त होते हैं। आचार्य जिन शासन के अधिनेता, चतुर्विध धर्मसंघ के शासक होते हैं। उन्हें तीर्थंकर का प्रतिनिधि होने का गौरव प्राप्त होता है। तीर्थंकरों का प्रतिनिधित्व करने वाले आचार्य होते हैं। उपाध्याय ज्ञानी पुरुष होते हैं। वे जैन शासन में आगम के अध्येता-अध्यायपिता होते

हैं, मानों ज्ञानमूर्ति होते हैं, ज्ञानप्रदाता और स्वाध्यायी होते हैं। साधु महाव्रतों की आराधना करने वाले, साधना करने वाले होते हैं। नमस्कार महामंत्र में इन पांचों को नमस्कार किया गया है। (पूज्यप्रवर ने 'श्रद्धा विनय समेत' गीत का संगान किया)

नमस्कार महामंत्र का एक पद है-'णमो सिद्धाणं'। श्वास लेते समय मन ही मन 'णमो' का जप और छोड़ते समय 'सिद्धाणं' का जप भी एक अच्छा प्रयोग है। इस प्रयोग को दीर्घश्वास के साथ करना चाहिए। यह भी योग-साधना का अच्छा प्रयोग हो सकता है। (पूज्यप्रवर ने उपस्थित जनता को कुछ समय दीर्घश्वास के साथ 'णमो सिद्धाणं' के जप का प्रयोग करवाया।) इस प्रयोग में शब्द भी है और साथ में दीर्घ श्वास का उपक्रम भी है। हम शब्द के माध्यम से उस अशब्द चेतना के साथ कुछ नैकट्य स्थापित करने का प्रयास कर सकते हैं। सिद्ध परमात्मा स्वरूप होते हैं। उनके न शरीर है, न वाणी है और न मन है। ऐसी परम पुनीत निर्मल, निरंजन आत्मा का स्मरण करने से हमारी चेतना भावात्मक रूप में उनके निकट हो सकती है।

योग का मुख्य लक्ष्य यह होना चाहिए कि मैं परमात्म स्वरूप को प्राप्त करूं। योग एक व्यापक और महत्त्वपूर्ण अर्थ देने वाला शब्द है। आदमी योग का प्रयोग अपने जीवन में करे तो उसका जीवन सुयोग वाला बन सकता है।'

पूज्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति एवं प्रेरणा प्राप्त कर नेलूरवासियों ने संकल्पत्रयी स्वीकार की। श्री नटवर दूगड़ आदि ने पूज्यप्रवर के स्वागत में गीत का संगान किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में अन्य जैन समाज के लोगों की उपस्थिति अच्छी संख्या में रही। कार्यक्रम के सिवाय भी दिन-रात्रि में वे लोग बड़ी संख्या में परम पूज्य आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए।

सायंकाल वेग के साथ बहने वाली हवा ने रात्रि में मानों विश्राम ले लिया। इस कारण उमस की स्थिति बन गई। आज मच्छरों का प्रकोप भी अत्यधिक था। एक मिनिट स्थिर बैठने का अर्थ था एक साथ कई मच्छरों को आमंत्रण देना। मच्छरों के तीखे दंश से उसकी खुजली भी कई देर तक खुजलाने की बाद ही जा रही थी। रात्रि शयन के दौरान मच्छर छिद्रान्वेषण कर मच्छरदानियों में भी प्रविष्ट हो गए और कई संतों की नींद को बाधित कर दिया। गर्मी के साथ मच्छरों का परीषह 'कोढ़ में खाज' कहावत को चरितार्थ कर रहा था।

सद्गुणरूपी आभूषण हैं जीवन के उपहार और श्रृंगार

२२ जून। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः नेलूर से काकटुर की ओर प्रस्थान किया। सुबह का समय होने के कारण नेलूर की सब्जी मंडी में अत्यधिक भीड़ थी। लोग अहिंसा यात्रा को साश्चर्य निहार रहे थे। कई लोगों ने पूज्यप्रवर को वंदन कर पावन आशीर्वाद भी प्राप्त किया।

आज सूर्य का आतप प्रारम्भ से ही कुछ न्यूनता लिए हुए था और हवा का वेग भी उसको नियंत्रित किए हुए था। परमाराध्य आचार्यप्रवर लगभग १२.५ कि.मी. का विहार कर काकटुर में स्थित श्री चौबीस तीर्थंकर तीर्थधाम जैन मंदिर में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में संत और युवक के कथानक के माध्यम से कहा--'शास्त्रकार ने कहा कि 'सव्वे आभरणा भारा...' बाह्य आभूषण भार होते हैं। इनकी अपेक्षा आन्तरिक आभूषणों को धारण किया जाए तो शरीर ही नहीं, जीवन सुशोभित हो सकता है। आचार्य सोमप्रभसूरि ने ऐसे कुछ आभूषण बताए हैं, जिनसे जीवन शोभित हो सकता है--

१. श्लाघनीय दान- हाथ दान से शोभित होता है। कंगन तो उसकी बाह्य शोभा है। वे हाथ पवित्र होते हैं, जिनसे सुपात्र को दान दिया जाता है, जिनसे दूसरों की पवित्र सेवा होती है।

२. गुरुचरणों में प्रणमन- गुरुचरणों में प्रणाम करने से सिर शोभित होता है। त्यागी गुरु/साधु को प्रणाम करना व्यक्ति के लिए हितकर होता है।

३. सत्यवाणी- मुंह का पवित्र आभूषण है सत्यवाणी का प्रयोग। गलत, अयथार्थ बात न कहकर यथार्थ बात कहना मुंह का आभूषण होता है। अयथार्थ और कटुवचनों से मुंह मलिन बनता है और पवित्र आर्षवाणी, यथार्थवाणी और मधुर वचनों से मुंह शोभित होता है।

४. शास्त्रवाणी का श्रवण- कुण्डल कान का बाह्य आभूषण होता है। कान का कल्याणकारी आभूषण है शास्त्र की कल्याणी वाणी को सुनना। दूसरों की निन्दा सुनने में रस लेना कान का दुरुपयोग है।

५. स्वच्छवृत्ति- स्वच्छ विचारधारा, ऋजुता हृदय का आभूषण है।

६. पौरुष- विजय दिलाने वाले पौरुष का होना भुजाओं का आभूषण है। गहनों से लदी हुई भुजाओं में भी शक्ति न हो तो क्या खास बात है। शक्ति का भी पवित्र सेवा में प्रयोग होना चाहिए। उसका दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।

इस प्रकार श्लाघनीय दान हाथ का, गुरुचरणों में प्रणमन सिर का, सत्यवाणी मुख का, शास्त्रवाणी का श्रवण कान का, स्वच्छवृत्ति हृदय का और विजय दिलाने वाला पौरुष भुजाओं का आभूषण है। हार आदि बाह्य आभूषण तो मानों भार हैं। सद्गुण रूपी आभूषण मानों उपहार हैं, श्रृंगार हैं। आदमी अपने जीवन में सद्गुणरूपी आभूषणों को धारण करने का प्रयास करे, यह काम्य है।'

चौबीस तीर्थंकर धाम के सेक्रेट्री श्री रमेशकुमार जैन ने कहा--'हमारा परम सौभाग्य है कि आचार्यश्री महाश्रमणजी के रूप में एक महापुरुष अपनी अहिंसा यात्रा के साथ पधारे हैं। यह आपका उपकार है, जो हमें आपकी सेवा, दर्शन और आपके मंगल प्रवचन का श्रवण करने का अवसर प्रदान किया। आपका आशीर्वाद हम सभी पर सदैव बना रहे, मैं ऐसी प्रार्थना करता हूं।'

सायंकाल करीब ५.१५ बजे परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर काकटुर से वेंकटचलम की ओर प्रस्थित हुए। आकाश मेघाच्छन्न बना हुआ था। इस कारण मौसम में शीतलता व्याप्त थी। वेग के साथ बहने वाली शीतल बयार वातावरण को और भी सुहावना रूप प्रदान किए हुए थी। करीब ४.३ कि.मी. का विहार कर पूज्यप्रवर वेंकटचलम स्थित स्वर्ण भारत ट्रस्ट में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

भारत के उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडू द्वारा स्थापित इस ट्रस्ट के अंतर्गत संचालित इस परिसर में विभिन्न प्रकार के हॉस्पिटल, लेबोरेट्री के अतिरिक्त रोजगार प्रक्षिण केन्द्र, वृद्धाश्रम, आवासीय विद्यालय, किसान प्रशिक्षण केन्द्र, महिला प्रशिक्षण केन्द्र, कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र, प्रजा मंदिरम्, नॉलेज सेन्टर आदि विविध उपक्रम संचालित हैं।

सज्जनता को धारण करें

२३ जून। परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातः वेंकटचलम से मनुबोलू की ओर प्रस्थान किया। आज का विहार कुछ प्रलम्ब था, किन्तु आकाश में छाए बादलों के कारण सूर्य अदृश्य बना हुआ था, इसलिए मौसम भी सुहावना रूप धारण किए हुए था। मंद-मंद हवा वातावरण को और भी अनुकूल बना रही थी। पूज्यप्रवर द्वारा करीब ग्यारह कि.मी. दूरी तय करने के उपरान्त सूरज दृश्यमान हुआ था। उसके प्रखर आतप को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि बादलों द्वारा अपने दमन से वह तमतमा गया है। उसकी तीखी धूप मानों शरीर को बींध रही थी। शरीर पसीने से तरबतर बन गया। मौसम की अनुकूलता और प्रतिकूलता दोनों ही परम पूज्य आचार्यप्रवर के समताभाव को बाधित करने में असमर्थ थीं।

मार्ग में एक स्थान पर लगे बोर्ड के अनुसार 'कृष्णापट्टनम् पोर्ट' विहार पथ से २६ कि.मी. दूर ही स्थित था। परमाराध्य आचार्यप्रवर करीब १४.५ कि.मी. का विहार कर मनुबोलू में पधारे। जिला परिषद

गर्ल्स हाइस्कूल में आज का प्रवास हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी गुणों से सज्जन और अगुणों से असज्जन बनता है। जीवन में गुणों से साधुता और अगुणों से असाधुता आती है। आचार्य सोभप्रभसूरि ने अपने ग्रंथ 'सूक्तिमुक्तावली' में सज्जन का चरित्र चित्रण करते हुए आठ बातें बताई हैं--

१. दूसरों के दोष को नहीं फैलाना- किसी के दोष को फैलाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। किसी पर निराधार आरोप लगाना तो और भी बड़ा अपराध है।
२. दूसरों की विशेषता को प्रचारित करना- दूसरों के गुणों को महत्त्व देना सज्जन का दूसरा लक्षण होता है। दूसरों की विशेषताओं को देखकर यह सोचना चाहिए कि वे मेरे जीवन में हैं या नहीं? यदि मेरे जीवन में वे विशेषताएं नहीं हैं तो मैं उन्हें आत्मसात् करने का प्रयास करूं।
३. दूसरों की ऋद्धि में संतोष धारण करना- दूसरों के सुख को देखकर दुःखी नहीं होना चाहिए, ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए।
४. दूसरों की संकट की स्थिति में खुशी नहीं मनाना। किसी के दुःख में तो उन्हें चित्त समाधि पहुंचाने का प्रयास करना चाहिए।
५. आत्मश्लाघा नहीं करना। तुच्छ मनोवृत्ति से आदमी को अपना बड़प्पन दिखाने के लिए, अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए अपनी प्रशंसा नहीं करनी चाहिए।
६. नीति को नहीं छोड़ना। व्यक्ति किसी भी परिस्थिति में न्याय मार्ग से विचलित नहीं होना चाहिए।
७. औचित्य का उल्लंघन नहीं करना। आदमी को उचित का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।
८. दूसरों के द्वारा अप्रिय बात कहे जाने पर भी क्षमा धारण करना। कोई कटु बात कह दे तो भी आदमी को क्षमा रखनी चाहिए। आदमी को हर किसी चीज को ग्रहण नहीं करना चाहिए। कोई गाली दे या कटु वचन बोले और उसे ग्रहण न किया जाए तो उससे उत्पन्न होने वाले आवेश से भी बचा जा सकता है।

ये आठ बातें किसी व्यक्ति में होती हैं तो मानना चाहिए कि वह सज्जन पुरुष है। एक-एक गुण ग्रहण करते जाएं तो जीवनरूपी घट सद्गुण से सम्पन्न बन सकता है। आदमी में धीरता, वीरता और गंभीरता रहे तो वह महान बन सकता है।

दूसरों में अच्छाई दिखाई दे तो आदमी को यह सोचना चाहिए कि मैं भी इसे ग्रहण करूं और दूसरों की बुराई को देखकर आदमी यह सोचे कि मुझमें तो यह बुराई नहीं है ना? यदि है तो मैं इसे दूर करने का प्रयास करूं। इस प्रकार दूसरों की अच्छाई और बुराई दोनों से प्रेरणा ली जा सकती है।'

शनिवार होने के कारण दक्षिण भारत में विभिन्न क्षेत्रों के लोग बड़ी संख्या में दो दिनों हेतु पूज्य सन्निधि का लाभ उठाने हेतु आज प्रातः ही पहुंच चुके थे। सायंकाल सूर्यास्त के आसपास चेन्नई के श्रद्धालु भी बड़ी संख्या में पहुंच गए। इस प्रकार शनिवार की सायं सात से आठ बजे के बीच होने वाली सामायिक के सामूहिक उपक्रम में सैंकड़ों श्रद्धालुओं की उपस्थित हो गई। पूज्यप्रवर की पावन सानिध्य में पूज्य इंगित की आराधना कर श्रद्धालुजन आह्लादित थे।

रविवार पर उमड़ा जनता का ज्वार

२४ जून। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः मनुबोलू से चिल्लाकुर की ओर प्रस्थान किया। प्रातःकाल से ही मौसम में उमस व्याप्त थी। सूर्य किरणें भी आज प्रखर आतप लिए हुए थीं, किन्तु आकाश में विहरण कर रहे बादल उन्हें यदा-कदा बाधित कर रहे थे। मार्ग के आसपास स्थान-स्थान पर 'पाइन' के वृक्ष हजारों की संख्या में सलक्ष्य उगाए हुए दृष्टिगोचर हो रहे थे।

आज रविवार होने के कारण चेन्नई और आसपास के श्रद्धालु बड़ी संख्या में उपस्थित थे। वर्षों बाद गुरुदर्शन करने वाले लोगों का पूज्यप्रवर के आसपास पैदल चलकर उत्साह और भी वृद्धिंगत हो गया। लोगों के आने का क्रम निरंतर जारी था। प्रवास स्थल के समीप तो श्रद्धालुओं की संख्या द्विगुणित हो गई। श्रद्धालुओं की विशाल उपस्थिति में उनका उत्साह और उल्लास भी अनायास मुखरित हो रहा था।

पूज्यप्रवर करीब ६.० कि.मी. का विहार कर चिल्लाकुर में स्थित लिटिल ऐंजल पब्लिक स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारे जीवन में कभी-कभी ऐसे अवसर आ सकते हैं कि एक बात या एक वाक्य या एक प्रवचन जीवन की दिशा और दशा को बदल दे। आदमी को चाहिए कि वह अपनी शक्ति का अच्छा उपयोग करे। आदमी के जीवन में शंति और शक्ति का योग रहता है तो जीवन महत्त्वपूर्ण बन जाता है। उसे शक्ति का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। शक्ति के साथ शांति नहीं है तो व्यक्ति शक्ति का उपयोग हिंसा, हत्या आदि में कर सकता है, किन्तु शक्ति के साथ शांति भी हो तो शक्ति के दुरुपयोग से बचाव हो सकता है और आदमी अपनी शक्ति का अच्छा उपयोग कर सकता है।

शांति मूलतः भीतर से ही मिल सकती है। शारीरिक सुख-सुविधा बाह्य उपकरणों से मिल सकती है, किन्तु भीतर शांति न हो तो बाह्य सुख-सुविधा के होने पर भी आदमी बेचैन रह सकता है। आदमी के जीवन में शक्ति और शांति का योग रहे और शक्ति का आध्यात्मिक उपयोग हो, यह अभिलषणीय है।'

लिटिल ऐंजल पब्लिक स्कूल की ऑनर श्रीमती सुदेषणा ने कहा--'यह मेरे जीवन में शायद पहला अवसर है जब मैं ऐसे किसी कार्यक्रम में भाग ले रही हूं। यह मेरा परम सौभाग्य ही है, जो राष्ट्रसंत, महातपस्वी गुरुजी यहां पधारे हैं और मुझे आपके दर्शन करने का अवसर मिला है। मुझे बहुत खुशी हो रही है कि आप अपनी अहिंसा यात्रा के द्वारा भारतीय संस्कृति की सुरक्षा करते हुए इतनी लंबी पदयात्रा पर निकले हैं। इस विशाल पदयात्रा में आपके चरण इस विद्यालय में पड़े, यह मेरे लिए अनमोल क्षण है। मैं आपको बारम्बार प्रणाम करती हूं।'

आज प्रायः दिनभर चेन्नईवासियों के आवागमन का क्रम जारी रहा। इस कारण प्रवास परिसर में अच्छी चहल-पहल रही। रात्रि में मौसम ने करवट ली और मेघाच्छन्न बने हुए बादल कुछ उमस के बाद हल्के रूप में बरसने लगे। इस बूंदाबांदी के बावजूद पूज्यप्रवर की निद्रा में विशेष व्यवधान नहीं हुआ।

साधना से प्राप्त होती है भीतरी प्रसन्नता

२५ जून। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर प्रातः चिल्लाकुर से वकाटीवरी-कंडरिया के लिए प्रस्थित हुए। प्रातःकाल से आसमान बादलों से आच्छादित बना हुआ था। इस कारण सूर्य अपने उदयकाल के काफी समय बाद तक अदृश्य बना रहा, किन्तु उसकी अनुपस्थिति में उमस उसका दायित्व निभाने के लिए मानों कृतसंकल्प थी। यही कारण था पूज्यप्रवर का तन पसीने से तरबतर बना हुआ था। आचार्यप्रवर द्वारा गंतव्य स्थल तक की करीब आधी दूरी तय करने के उपरान्त हवा बहने लगी तो सूर्य बादलों को चीरकर दृश्यमान हुआ और आतप बरसाने लगा, किन्तु आज के विहार पथ के परिपार्श्व में स्थित वृक्षों की छाया और हवा के वेग के कारण उसके आतप की प्रखरता प्रतिकूल स्थिति को उत्पन्न करने में असक्षम ही सिद्ध हुई। वृक्षों की छाया और मंद-मंद हवा गर्म मौसम में भी राहगीरों की सहयोगी बनी हुई थीं।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर लगभग १४.० कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर वकाटीवरी-कंडरिया स्थित सिवन्थी आदित्यान स्पोर्ट्स फाउण्डेशन में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी के चेहरे पर भीतर के भाव आर्विभूत हो जाते हैं। उस व्यक्ति के भय, चिन्ता, आलस्य, बेचैनी, आनंद, सुख, दुःख आदि भीतरी भावों को उसकी आंखों के माध्यम से पढ़ा जा सकता है। भीतरी प्रसन्नता का बाहर से ज्यादा संबंध नहीं होता। वह तो कुएं के पानी के समान है, वह भीतर से प्रसूत होती है। कुंड के पानी के समान जो प्रसन्नता बाहर से प्राप्त होती है, वह स्थायी नहीं होती।

जो व्यक्ति ज्ञेय को जानता है, हेय को छोड़ने की साधना करता है और उपादेय को ग्रहण करता है, उसके भीतर प्रसन्नता का स्रोत प्रस्फुटित होता है। ज्यों-ज्यों राग-द्वेष मुक्ति की साधना बढ़ती जाती है, त्यों-त्यों भीतरी प्रसन्नता बढ़ती जाती है। अध्यात्म की साधना है तो भीतरी आनंद प्राप्त हो सकता है।

भौतिकता से बाह्य सुविधा मिल भी सकती है, किन्तु भीतर का आनंद उससे कैसे मिल सकता है। जहां भोग है, वहां किसी माने में रोग है और जहां योग है, वहां किसी माने में अरोग है। भोगप्रधान जीवनशैली रोग की ओर ले जाने वाली हो सकती है और योगप्रधान जीवनशैली नीरोगता की दिशा में आगे बढ़ा सकती है।

हिंसा, झूठ आदि अठारह पाप हेय हैं और संवर, निर्जरा उपादेय हैं। पुण्य भी हेय हैं। आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करनी चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।'

आज प्रायः दिन भर सूर्य और बादलों के बीच मानों आंख-मिचौली का खेल चलता रहा। कभी बादल सूर्य को अदृश्य होने के लिए विवश कर रहे थे तो कभी सूर्य अपनी तेजस्वी किरणों से बादलों को भेदकर दृश्यमान बन रहा था। सायंकाल बारिश प्रारम्भ हो गई और उसने क्रमशः तेज रूप धारण कर लिया। उमस, पसीने से बेहाल लोगों के चेहरे खिल उठे। कुछ समय बाद वर्षा कुछ समय के लिए थमी। थोड़ी ही देर में वह पुनः प्रारम्भ हो गई। इस प्रकार करीब आधे घंटे तक कुछ तेज रूप में बारिश हुई। वर्षा के बाद मौसम और भी सुहावना बन गया। शीतल हवा वातावरण को सुरम्य बनाए हुए थी। सूर्यास्त से करीब एक घंटा पूर्व इन्द्रधनुष भी दिखने लगा। सूर्यास्त के बाद बिजलियां कड़कने लगीं। मौसम को देखते हुए पुनः वर्षा की संभावना प्रतीत हो रही थी, किन्तु मात्र हल्की बूंदाबांदी के सिवाय रात्रि में वर्षा नहीं हुई।

कर्मों से हो सकती है व्यक्तित्व की व्याख्या

२६ जून। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातः वकाटीवरी-कंडरिया से नायडुपेट की ओर प्रस्थान किया। आज भी आकाश में हल्के बादल छाए हुए थे, किन्तु पश्चिम दिशा में स्थित थे। इस कारण सूर्य मानों स्वच्छंदतापूर्वक तीव्र आतप बरसा रहा था। उसकी तीखी धूप शरीर को मानों बींध रही थी। बादलों की अनुपस्थिति में मार्ग के परिपार्श्वस्थ वृक्ष छाया कर उनका दायित्व निभा रहे थे। वृक्षों की छाया में मंद-मंद हवा राहगीरों को राहत देने का प्रयास कर रही थी, किन्तु वृक्षों की छाया हट रही थी तो सूर्य हवा पर भी अपना साम्राज्य स्थापित कर रहा था। जन-जन के आतप को हरने वाले आचार्यप्रवर प्रखर आतप की परवाह किए बिना निरंतर गंतव्य की ओर गतिशील थे।

पूज्यप्रवर नायडुपेट में स्थित प्रवास स्थल में पधारने के लिए राष्ट्रीय राजमार्ग नंबर-१६ से राष्ट्रीय राजमार्ग नंबर-७१ पर पधारे। गंतव्य स्थल से करीब दो कि.मी. पूर्व स्थित रेलमार्ग के निकट पूज्यप्रवर पधारे तो वहां से अणुव्रत एक्सप्रेस निकली। ज्ञातव्य है कि आचार्य तुलसी जनशताब्दी के उपलक्ष्य में भारत सकरार द्वारा बीकानेर और चेन्नई के बीच चलने वाली इस रेल का नामकरण 'अणुव्रत एक्सप्रेस' किया गया था। उसके बाद संभवतः पहली बार यह रेल पूज्यप्रवर की दृष्टि का विषय बनी।

मार्गवर्ती सुक्कुपेट की महिलाओं ने पूज्यप्रवर को वंदन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। स्वर्णमुखी नदी पर बने पुल से पूज्यप्रवर नदी के इस पार पधारे। वर्तमान में यह नदी सूखी हुई अवस्था में है। पुल को देखकर यह सहज ही अनुमानित हो रहा था कि यह काफी पुराना पुल है। मार्ग के आसपास चावलों और ईख की खेती बहुतायत में दृष्टिगोचर हुई।

नायडुपेट में आठ जैन परिवार निवासित हैं। पूज्यप्रवर के पदार्पण से उनमें उल्लास का वातावरण था। वे पूज्यप्रवर की अगवानी को सोत्साह उपस्थित थे। पूज्यप्रवर करीब १२.५ कि.मी. का विहार कर नायडुपेट में स्थित जिला परिषद हाइस्कूल में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'कर्म कर्ता का ही अनुगमन करता है। जो आदमी पाप करता है, उसका फल उसी को भोगना होता है। तपस्या से कर्मों को काट दिया जाए तो उनसे छुटकारा मिल सकता है, अन्यथा उन्हें भोगना ही होता है।

जैन वाङ्मय में आठ कर्म बताए गए हैं--ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र और अंतराय। प्राणियों का जीवन इन आठ कर्मों से जकड़ा हुआ है। हम कर्मों के कारण मनुष्य के रूप में हैं। कोई स्वस्थ है, कोई बीमार है, कोई प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहा है, कोई बदनाम हो रहा है, कोई गूंगा, बहरा, लूला, लंगड़ा है, कोई मानसिक दृष्टि से अविकसित है, कोई बुद्धिमान है, इन सबकी पृष्ठभूमि में पूर्वकृत कर्मों का उदय अथवा कर्मों का विलय होता है अर्थात् आदमी के व्यक्तित्व की व्याख्या कर्म के माध्यम से भी हो सकती है। आदमी यह ध्यान दे कि वह ऐसे कर्म न करे कि बाद में कष्ट भोगना पड़े। हंस-हंसकर बांधे हुए पापकर्मों को कई बार रो-रोकर भोगना होता है। कर्मों के जाल से मुक्त होने का आध्यात्मिक प्रयास ही वास्तविक साधना होती है।

जब पाप का उदय होता है, तब ज्ञाति लोग भी उससे उत्पन्न दुःख को बंटा नहीं सकते। मित्र लोग भी नहीं बंटा सकते, अपने पुत्र, बंधु भी नहीं बंटा सकते। जिसने कर्म किया है, उसी को उसका फल भोगना होता है। पुण्य का योग हो तो आदमी बड़े से बड़े संकट की स्थिति में भी बच जाता है।

आठ कर्मों में चार कर्म एकान्त पाप होते हैं--ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अंतराय। शेष चार कर्म--वेदनीय, आयुष्य, नाम और गोत्र शुभ और अशुभ दोनों होते हैं। मनुष्य सदाचार के पथ पर चले, ताकि वह पाप कर्मों के बंधन से बच सके। मोक्ष के लिए तो पुण्य और पाप दोनों का क्षय आवश्यक होता है। आदमी कर्मवाद को समझकर पापाचार से बचता रहे, यह काम्य है।'

कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षकों, मीडिया से संबंधित लोगों और अन्य ग्रामीणों ने अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्राप्त करते हुए पूज्यप्रवर से संकल्पत्रयी स्वीकार की।

नायडुपेट से सुप्रसिद्ध तिरुपति मंदिर लगभग ७० कि.मी. दूर ही स्थित है। बताया गया कि आंध्रप्रदेश के चित्तूर जिले में स्थित वेंकटेश्वर मंदिर (तिरुपति मंदिर) में प्रतिवर्ष लाखों लोग आते हैं। तिरुमाला पहाड़ियों पर बने इस मंदिर में जाने के लिए प्रतिदिन लम्बी कतारें लगती हैं।

सायंकाल करीब ५.३० बजे परमाराध्य आचार्यप्रवर नायडुपेट से मलयकोटा की ओर प्रस्थित हुए। बादलों के कारण धूप प्रायः नहीं थी, किन्तु हल्की उमस वातावरण में व्याप्त थी। मार्ग में एक स्थान पर एक भिक्षुक पूज्यप्रवर के समक्ष हाथ फैलाकर खड़ा हुआ तो पूज्यप्रवर ने उसके समीप अपने चरण थामकर उसे 'दाणाणसेट्ठं.....' श्लोक सुनाकर आशीर्वाद प्रदान किया। यत्र-तत्र खड़े नायुडुपेटवासी भी पूज्यप्रवर को वंदन कर पावन आशीष प्राप्त कर रहे थे।

विहार के दौरान पूज्यप्रवर पुनः राष्ट्रीय राजमार्ग नंबर १६ पर पधार गए। करीब ३.६ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर मलयकोटा में स्थित वलुगु ऑफिस में पधारे। आज रात्रि का प्रवास यहीं हुआ।

विनय और समर्पण से जमाएं गुरु के दिल में स्थान

२७ जून। परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातः मलयकोटा से दोरावरीसत्रम् की ओर प्रस्थान किया। आज सूर्योदय से पूर्व ही आसमान मेघाच्छन्न बना हुआ था। मंद-मंद ठंडी हवा बह रही थी। पूरे आसमान में बादल ही बादल दिखाई दे रहे थे। मानों प्रकृति ने इस महापुरुष के लिए छतरी फैला ली हो। सुहावने मौसम में मार्गवर्ती 'फ्लाईओवर' के ऊपर से आसपास फैली हरियाली का दृश्य और भी रमणीय लग रहा था। दूर-दूर तक फैले हजारों वृक्ष नयनाभिराम दृश्य उपस्थित कर रहे थे। कुछ दूरी पर स्थित पहाड़ भी मानों अनायास राहगीरों को आकर्षित कर रहे थे।

आज के विहार पथ के बायीं ओर लगे पत्थर पर चेन्नई १०० कि.मी. अंकित था तो दांयीं ओर लगे पत्थर पर कोलकाता १६०० कि.मी. अंकित था। दोनों पत्थरों को देखकर यह स्पष्ट था कि चेन्नई से कोलकाता की दूरी लगभग १७०० किलोमीटर है। पूज्यप्रवर ने कोलकाता से यहां तक पधारने के लिए करीब १००० से ज्यादा किलोमीटर की अतिरिक्त यात्रा की है। एक चतुर्मास के बाद दूसरे चतुर्मास से पूर्व तक आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा ही नहीं, तेरापंथ की आचार्य परंपरा में आचार्य तुलसी के सिवाय अन्य आचार्यों द्वारा की गई यात्राओं में यह सर्वाधिक लम्बी यात्रा है।

पूज्यप्रवर लगभग १०.५ कि.मी. का विहार कर दोरावरीसत्रम् में स्थित जिला परिषद हाइस्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत 'हाजरी' वाचन के संदर्भ में उपस्थित साधु-साध्वियों को विशेष रूप से लक्षित करते हुए अपने पावन प्रवचन में कहा--'गुरु कभी प्रतिबंध भी लगा सकते हैं तो कभी उनके मुखारविन्द से वात्सल्य की वर्षा भी हो सकती है तो कभी-कभी वे कठोर अनुशासन भी कर सकते हैं। इन सबका लक्ष्य यही होना चाहिए कि शिष्य का अच्छा निर्माण हो जाए। मिट्टी से घड़े का निर्माण होता है। घड़े को जलाहरण के लायक बनाने के लिए कुम्हार को उसे कितनी प्रक्रिया से गुजारना होता है। प्रक्रिया से गुजरा घड़ा जलाहरण के लायक हो जाता है। गुरु इस मायने में कुम्भकार के समान होते हैं और शिष्य घड़े के समान। जिसके निर्माण का प्रयास गुरु के द्वारा यथौचित्य किया जाता है।

हमारे जीवन में सद्गुरु का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ में तो गुरु का बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। एक ओर वे अनुशास्ता, प्रशास्ता, अधिशास्ता होते हैं और दूसरी ओर वे वाचना, मार्गदर्शन देने वाले होते हैं। गुरु के प्रति सम्मान का भाव शिष्य के लिए कल्याणकारी होता है।

गुरु की आसातना मोक्ष में बाधक बन जाती है। इसलिए अनाबाध सुख के आकांक्षी शिष्य को गुरुकृपा के अभिमुख रहना चाहिए। एक दृष्टि से गुरुकृपा मोक्ष का आधार होती है। बिना सेनापति की सेना का क्या महत्त्व होता है, उसी प्रकार गुरु की आज्ञा के बिना किये गए ध्यान, ज्ञान, तपस्या, भावना आदि का भी कितना क्या महत्त्व रह जाता है।

जिन्हें हमने गुरु के रूप में स्वीकार कर लिया, उनके प्रति अत्यधिक सम्मान का भाव हमारे मन में रहना चाहिए। गुरु के निर्देश को बहुमान देना चाहिए। उनका आदेश तो बड़ी बात होती है, थोड़ा इंगित भी मिल जाए तो उस पर सजगतापूर्वक ध्यान देना चाहिए। जिसके मन में गुरु के प्रति पवित्र सम्मान और विनय का भाव आ जाता है, उस शिष्य में एक पात्रता तो आ जाती है। गुरु तो सब नहीं बन सकते, किन्तु अपने विनय, समर्पण और साधनापूर्ण व्यक्तित्व के द्वारा गुरु के दिल में स्थान बनाया जा सकता है। गुरु के हृदय में स्थान जमाना भी अपने आप में बड़ी बात होती है।

हमारे धर्मसंघ में गुरु आज्ञा को बहुत ही महत्त्व दिया गया है। इस धर्मसंघ में सामान्यतया गुरु की आज्ञा का लंघन करने का दुस्साहस होता नहीं है और हो जाए तो उसे लंघन करने वाले के दुर्भाग्य की बात

माननी चाहिए। हमारा कर्त्तव्य है कि हम हमारी इस परंपरा को अक्षुण्ण और पुष्ट रखने में अपना योगदान देते रहें। गुरु के प्रति निर्मल समर्पण बहुत बड़ी बात होती है।' आचार्यप्रवर ने 'हमारे भाग्य बड़े बलवान' गीत का आंशिक संगान भी किया।

पूज्यप्रवर ने अपने प्रवचन के उपरान्त चतुर्दशी के संदर्भ में साधु-साध्वियों की उपस्थिति में 'हाजरी' का वाचन करते हुए पावन पाथेय प्रदान किया। कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षकों को अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति दी गई तो उन्होंने संकल्पत्रयी स्वीकार की।

स्मृति संबल

- गंगाशहर निवासी एवं बोकारो/नोएडा प्रवासी श्री धर्मचंदजी लोढा (सुपुत्र स्व. श्री चिमनीरामजी लोढा) का देहावसान हो गया। वे एक कर्मठ कार्यकर्ता थे। उन्होंने झारखण्ड में जीवन विज्ञान एवं अणुव्रत के प्रचार-प्रसार में सक्रिय सहयोग दिया। अनेक प्रबुद्ध एवं अधिकारी लोगों को गुरुओं के दर्शन करवाकर उन्हें जीवन विज्ञान आदि का प्रशिक्षण भी दिया। पूज्यप्रवर द्वारा उन्हें 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' अलंकरण भी प्राप्त था। वे मुनिश्री मधुकरजी के संसारपक्षीय भ्राता, साध्वी मधुरेखाजी के संसारपक्षीय चाचा एवं साध्वी मधुयशाजी के संसारपक्षीय पिता थे। अंतिम दो माह को छोड़कर प्रतिदिन दो सामायिक का नियम निभाया। पूरा लोढा परिवार संघ एवं संघपति के प्रति अटूट आस्था वाला परिवार है।
- बीदासर निवासी सूरत प्रवासी श्रीमती कांतादेवी सेखानी (धर्मपत्नी स्व. श्री किशनलालजी सेखानी) कालधर्म को प्राप्त हो गई। प्रतिदिन त्याग, प्रत्याख्यान, माला एवं सामायिक किया करती थी। प्रतिवर्ष गुरुदर्शन एवं चतुर्मासकाल में दर्शन सेवा का लाभ लिया करती थी। बाल्य अवस्था से ही हरी जमीकंद एवं पान सुपारी का प्रत्याख्यान किया हुआ था। वे सरल स्वभावी, मधुरभाषी, मिलनसार एवं सादगीपूर्ण जीवन जीने वाली श्राविका थी। साध्वीश्री झमकुजी उनके परिवार से दीक्षित साध्वी है। सेखानी परिवार श्रद्धाशील परिवार है।
- सरदारशहर निवासी श्री संपतमल सेठिया (सुपुत्र स्व. श्री जसकरण सेठिया) का निधन हो गया। स्वस्थता की अवस्था तक प्रतिदिन माला एवं सामायिक का क्रम रहा। युवावस्था से ही साहित्य रसिक थे। आगम ग्रंथों एवं संत साहित्य के पठन में अपना समय नियोजित करते थे। पूज्यप्रवर की गीतिकाओं एवं पुराने संतों के अनेक छंद उन्हें कंठस्थ थे। वे स्पष्ट वक्ता के रूप में प्रसिद्ध थे। उनके परिवार से संबद्ध साध्वी ललितप्रभाजी संघ में साधनारत हैं। तेयुप सरदारशहर के मंत्री के रूप में भी अपनी सेवाएं दीं। कुछ महीनों पूर्व अपने पुत्र के देहावसान होने के बाद उनका स्वास्थ्य भी कमजोर हो गया। विशाखापट्टनम में पूज्यप्रवर की दर्शन, सेवा की भावना मन में रह गई। पूरे परिवार में धर्म की गहरी निष्ठा है।
- पड़िहारा निवासी विशाखापट्टनम प्रवासी श्री भीखमचंदजी गोलछा (सुपुत्र स्व. श्री मेघराजजी गोलछा) का निधन हो गया। प्रतिदिन माला, सामायिक आदि का क्रम जिंदगी भर चला। वे नशामुक्त थे। चारित्रात्माओं की रास्ते की सेवा में विशेष रुचि रखते थे। पड़िहारा तेयुप के मंत्री एवं विशाखापट्टनम सभा में उपाध्यक्ष के रूप में सेवाएं दीं। वर्तमान में पूज्यप्रवर के विशाखापट्टनम प्रवास के लिए बहुत उत्साहित थे। व्यवस्था समिति में भी सक्रिय कार्यकर्ता थे। अन्य अनेक सामाजिक संस्थाओं में भी सक्रियता से भाग लेते थे। आगम ग्रंथों एवं संघीय साहित्य पठन में अपना समय लगाते थे। दोनों पुत्र उन्हीं के पथ पर संघ में सेवारत हैं। पूरे परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- जसोल निवासी हिरयूर, सूरत, बेंगलुरु प्रवासी श्रीमती ज्योतिदेवी तातेड़ (धर्मपत्नी स्व. श्री भंवरलालजी तातेड़) का देहावसान हो गया। वे श्रद्धाशील एवं संघ समर्पित श्राविका थी। प्रायः प्रतिवर्ष चातुर्मास में सजोड़े लंबी सेवा, उपासना किया करती थी। प्रतिदिन पांच सामायिक एवं अन्य अनेक त्याग-प्रत्याख्यान करती थीं।

२५० बेले एवं २ अठाई आदि तपस्या भी करती थी। ५० वर्षों से रात्रि चौविहार का नियम सजगतापूर्वक पालन किया। मुनिश्री दिनेशकुमारजी की संसारपक्षीया भगिनी को पूज्यप्रवर ने 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' अलंकरण से अलंकृत किया। पूरे तातेड़ परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।

बहुआयामी और बहुउपयोगी तेरापंथ एप : एक परिचय

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा तेरापंथ समाज के लिए 'तेरापंथ' नामक बहु आयामी और बहुउपयोगी मोबाईल एप का निर्माण किया गया है। यह मोबाईल एप एंड्रोयड फोन के 'गूगल प्ले स्टोर' तथा एप्पल फोन के 'एप्पल स्टोर' पर उपलब्ध है। इस एप में उपलब्ध फीचर्स इस प्रकार हैं--

अबाउट तेरापंथ-- इस फीचर में भगवान् महावीर, जैन धर्म, तेरापंथ, आचार्यश्री भिक्षु, आचार्यश्री महाश्रमण आदि के परिचय उपलब्ध हैं।

न्यूज-- इस न्यूज के अंतर्गत आचार्यप्रवर के प्रतिदिन के समाचार तथा धर्मसंघ के विशिष्ट समाचार उपलब्ध रहते हैं। 'एरिया वाइज न्यूज' के अंतर्गत अपने-अपने क्षेत्र के समाचार पोस्ट भी किए जा सकते हैं और उनसे अवगत भी हुआ जा सकता है।

मेग्जीन्स-- इस फीचर के अंतर्गत तेरापंथ धर्मसंघ की विज्ञप्ति आदि पत्र-पत्रिकाएं उपलब्ध हैं। पोस्टल सर्विस उपलब्ध होने वाले नवीन अंकों को इस एप्प के माध्यम से पहले ही पढ़ा जा सकता है।

बुक्स-- इसके अंतर्गत धर्मसंघ की महत्त्वपूर्ण पुस्तकें 'ईबुक' के रूप में उपलब्ध हैं।

विडियो एण्ड प्रवचन-- इस फीचर में आचार्यप्रवर की यात्रा आदि के प्रतिदिन के विडियो तथा पूज्यप्रवर के दैनिक प्रवचन प्रतिदिन देखे जा सकते हैं।

सौंग्स-- एप्प के इस फीचर में विभिन्न संगायकों द्वारा गाए गए धर्मसंघ के गीत-भजन उपलब्ध हैं।

फोटोज-- इसके माध्यम से आचार्यप्रवर और धर्मसंघ के महत्त्वपूर्ण फोटो प्राप्त किए जा सकते हैं।

गुरुवन्दना-- इस फीचर के माध्यम से सायंकाल ठीक सात बजे से प्रतिदिन गुरुवन्दना की जा सकती है।

मंगलपाठ-- इस फीचर के अंतर्गत आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ तथा आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा उच्चरित मंगलपाठ कभी भी सुना जा सकता है तथा इसे अलार्म के रूप में भी प्रयुक्त किया जा सकता है।

मंत्र-- इसके माध्यम से कई आध्यात्मिक मंत्रों को सुना जा सकता है तथा अपनी सुविधा के अनुसार उनके जप की संख्या भी निर्धारित की जा सकती है।

नोलेज जोन-- इसके अंतर्गत जैनिज्म, अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान आदि के संदर्भ में जानकारी उपलब्ध है।

लोकेटर-- इस फीचर के माध्यम से पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल का लोकेशन जाना जा सकता है।

कैलेण्डर-- इसके अंतर्गत हिन्दी और अंग्रेजी दोनों पंचांग उपलब्ध हैं। इसके माध्यम से जैन धर्म, तेरापंथ के प्रमुख पर्वों, त्योहारों आदि की जानकारी प्राप्त की जा सकती है तथा पक्खी की जानकारी भी इसके माध्यम से मिल सकती है।

स्मारणा (श्रावक संदेशिका)

• केन्द्रीय संस्थाओं के अधिवेशन-सम्मेलन-आयोजन के संदर्भ में ध्यातव्य है कि

(१) प्रवृत्तिगत या सूचनागत बैनर के अतिरिक्त अधिवेशन के संदर्भ में दो बैनर से अधिक न लगाए जाएं।

(२) बैनर पंडाल व कार्यक्रम हॉल के अतिरिक्त कहीं पर भी न लगाए जाएं।

(३) स्वागत द्वार (तोरण) आदि न बनाए जाएं।

(४) डेकोरेशन लाइटों का प्रयोग नहीं किया जाए।

(५) किट न दिया जाए, सामान्य फोल्डर फाइल हो तो आपत्ति नहीं।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

(६) भोजन में १३ द्रव्यों से अधिक न किए जाएं।

(७) गुरुकुलवास में अधिवेशन, सम्मेलन आदि के प्रायोजक का नाम बैनर, किट आदि पर न लिखा जाए, न गुरुकुलवास के संवादों की विज्ञप्ति में दिया जाए। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अतिरिक्त कार्यक्रम में मोमेन्टो आदि से उसका सम्मान किया जा सकता है तथा संस्था के प्रतिवेदन में उसका उल्लेख भी किया जा सकता है। सहयोगी के रूप में प्रवास व्यवस्था समिति का उल्लेख हो तो आपत्ति नहीं।

(८) गुरुकुलवास में अधिवेशन आदि का फोल्डर छपे, उसमें साधु-साध्वियों के भाषण आदि का उल्लेख हो तो आपत्ति नहीं। परन्तु अन्य कोई प्रोग्राम विशेष हो तो उनमें साधु-साध्वियों का (कार्ड आदि में) नामोल्लेख होना अपेक्षित नहीं है। बाकी जैसे आचार्यप्रवर इंगित करें, उस पर ध्यान दे लिया जाए।

(९) केन्द्रीय संस्थाओं के अधिवेशन, सम्मेलन आदि में संस्थाओं के द्वारा आवास व संगोष्ठी व्यवस्था फाइव स्टार होटल में नहीं की जाए। स्थान अनुपलब्ध होने पर उसकी पूर्व सूचना कल्याण परिषद् में आ जानी चाहिए। थोड़ी कठिनाई भोगकर भी फाइव स्टार से बचना चाहिए। **(धारा २१५)**

- ते.यु.प., तेरापंथ किशोरमंडल, ते.म.मं., तेरापंथ कन्यामंडल, सभा प्रतिनिधि सम्मेलन तथा अणुव्रत महासमिति आदि केन्द्रीय संस्थाओं के वार्षिक अधिवेशन के अनेक दिनों के कार्यक्रम में सामान्यतया मंचीय कार्यक्रम एक ही दिन रखा जा सकेगा। मंचीय कार्यक्रम में लगभग पन्द्रह मिनट का समय व तीन प्रस्तुतियां हो सकेंगी। साधु-साध्वियां भी अधिवेशन के संदर्भ में उसी दिन बोल सकेंगे। अधिवेशन, सम्मेलन आदि की किट चारित्रात्माओं को भेंट नहीं की जाए, प्रोग्राम पत्रक उपहृत किया जा सकता है। यदि अनेक केन्द्रीय संस्थाओं का कार्यक्रम संयुक्त रूप में हो तो पन्द्रह मिनट की जगह पच्चीस मिनट का समय दिया जा सकता है। पच्चीस मिनट का समय एक अथवा अनेक दिनों में लिया जा सकता है। **(धारा २०४)**
- उपासकशिविर, प्रेक्षाध्यानशिविर आदि के उपक्रमों में मंचीय कार्यक्रम एक ही दिन रखा जा सकेगा। **(धारा २०५)**
- संघीय संस्थाओं द्वारा निर्मित मोमेन्टो आदि पर आयोजक-प्रायोजक व्यक्तियों के नाम अंकित न किए जाएं। संस्था का ही नाम लगाया जाए। **(धारा २१६)**

नवीन घोषित चतुर्मास

मुनिश्री राजकरणजी, मुनिश्री मुनिव्रतजी	गंगाशहर
मुनिश्री मणिलालजी	केलवा
साध्वी मोहनकुमारीजी 'श्रीडूंगरगढ़'	सिवानी
साध्वी हुलासांजी	देशनोक
साध्वी पानकुमारीजी 'प्रथम'	तुलसी साधना केन्द्र, बीकानेर
साध्वी पानकुमारीजी 'द्वितीय'	लूणकरणसर

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001

मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला